तृतीय वर्ष (षष्ठ पत्र)
पारिभाषिक शब्दावली

① परस्प - एङः परस्पम् । 6/1/94
अर्थः- आदुपसर्गाद् एङादौ धातौ परे परस्पमेकादेशः स्यात् ।
अवर्णान्त (अ या आ) उपसर्ग के बाद एकारादि या ओकारादि धातु आये तो पूर्व और पर वर्ण के स्थान पर परस्प ('ए' या 'ओ') एकादेश होता है।
उदा० - प्रेजते, उपोषति । प्र+एजते, उप+ओषति इन उदाहरणों में अकारान्त उपसर्ग 'प्र' के और 'उप' के बाद एकारादि धातु 'एजते' और ओकारादि धातु 'ओषति' के परे होने कारण पूर्व-पर के स्थान पर परस्प एकार और ओकार आदेश होकर 'प्रेजते' और 'उपोषति' रूप सिद्ध होता है।

अतो गुणे । 6/1/97
अर्थः- अपदान्तादतो गुणे परस्पमेकादेशः स्यात् ।
अपदान्त ह्रस्व अकार से 'अ, ए, ओ' के परे होने पर पूर्व-पर के स्थान पर परस्प एकादेश होता है।
उदा० - पठ + अन्ति = पठन्ति । ~~यहाँ ठकारोत्तरवर्ती~~ अपदान्त ह्रस्व अकार से गुण अकार परे होने से पूर्व-पर के स्थान पर परस्प 'अ' होकर पठन्ति रूप बना ।

IND CamScanner App

(2) पद - सुप्तिङन्तं पदम्। 1|4|14
अर्थः- सुबन्तं तिङन्तं च शब्दरूपं पदसंज्ञं स्यात्।
अर्थ- सुप्प्रत्ययान्त और तिङ्प्रत्ययान्त शब्दरूप की पदसंज्ञा होती है।
उदा०- राम + सु = रामः। 'राम' से सुप्- 'सु' प्रत्यय हो 'रामः' शब्द बनता है। इसीप्रकार अन्त में तिङ्-'तिप्' प्रत्यय होने के कारण भवति, पठति आदि शब्द भी पदसंज्ञक होते हैं।

(3) भ - यचि भम्। 1|4|18
अर्थः- यकारादिषु अजादिषु स्वादिष्वसर्वनामस्थानेषु च पूर्वं भसंज्ञं स्यात्।
सर्वनामस्थान से भिन्न यकारादि और अजादि (जिनके अन्त में कोई स्वर हो) और स्वादिप्रत्यय परे होने पर पूर्व शब्द समुदाय की भसंज्ञा होती है।
उदा०- विश्वपा + शस् (अस्) यहाँ अजादि प्रत्यय 'अस्' परे होने पर 'विश्वपा' की भसंज्ञा होती है।

(4) घु - दाधा घ्वदाप्। 1|1|20
अर्थः- दारूपा धारूपाश्च धातवो घुसंज्ञाः स्युर्दाप्दैपौ च वर्जयित्वा।
'दा' और 'धा' रूपवाली धातुएँ (घु) 'घु' संज्ञक होती हैं।
'दा' रूपवाली चार धातुएँ हैं - 1- डुदाञ् (जुहोत्यादि०, दान देना), 2- दाण् (भ्वादि०, दान देना), 3- दो (दिवादि०,

 IND CamScanner App

खाँटना या काटना), ५- देङ् (भ्वादि०, रक्षाकरना) धारूप धातुएँ दो हैं- १- डुधाञ् (जुहोत्यादि०, धारण या पोषण करना), २- धेट् (भ्वादि०, पीना) इसप्रकार इन छः धातुओं की 'घु संज्ञा' होती है। घुसंज्ञा होने पर इन धातुओं से क्तिप्रत्यय में ईकारादेश आदि घु संज्ञा विषयक कार्य होकर दीयते आदि रूप बनते हैं।

(5) टि - अचोऽन्त्यादि टि।
अर्थः- अचां मध्ये योऽन्त्यः, स आदिर्यस्य तट्टिसंज्ञं स्यात्।
अचों के मध्य में अन्त्य अच् जिसके आदि में हो, ऐसा शब्दस्वरूप टिसंज्ञक होता है।
उदा०- मनस् + ईषा = मनीषा, शक + अन्धु = शकन्धु
सूत्रार्थ को इसतरह भी समझ सकते हैं-
(क) शब्द के अन्तिम स्वर के पश्चात् यदि कोई व्यंजन आवे तो उस अन्तिम स्वर और व्यंजन के सम्मिलित रूप को 'टि' कहते हैं। यथा- 'मनस्' में 'अस्' टिसंज्ञक है।
(ख) शब्द के अन्तिम स्वर के पश्चात् यदि कोई व्यंजन न आवे तो उस अन्तिम स्वर को ही 'टि' कहते हैं। यथा- 'शक' में अन्त्य अकार 'टि' संज्ञक है।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

IND CamScanner App